www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-4* *November 2024***

पेरियार के समाज दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० अजीत कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर विभाग दर्शनशास्त्र, जी० डी० कॉलेज, बेगूसराय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश–

पेरियार ई. वी. रामासामी दक्षिण भारत के प्रख्यात समाज सुधारक, चिंतक और ष्आत्मसम्मान आंदोलनष् के जनक थे। उनका समाज दर्शन तर्क, समानता, सामाजिक न्याय और अंधविश्वासों के विरोध पर आधारित था। पेरियार ने जाति–व्यवस्था, पितृसत्ता और धार्मिक रूढ़ियों को भारतीय समाज की प्रगति में प्रमुख बाधा माना। वे ब्राह्मणवादी वर्चस्व के घोर विरोधी थे और शिक्षा, समान अवसर तथा तर्कसंगत विचार को समाज परिवर्तन का आधार मानते थे। उनके विचारों में बौद्ध और चार्वाक दर्शन की तर्कशीलता तथा आधुनिक मानवतावाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य की असमानता का मूल कारण धर्म और जाति आधारित भेदभाव है, जिसे समाप्त करना आवश्यक है। स्त्री मुक्ति पर पेरियार का दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील था, उन्होंने स्त्रियों के शिक्षा, विवाह, संपत्ति के अधिकार और समान सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए आवाज उठाई। समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो पेरियार का समाज दर्शन सामाजिक क्रांति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। उन्होंने समाज में चेतना जगाई, परंतु उनके कुछ विचार अत्यधिक कट्टर और धार्मिक संस्थाओं के प्रति नकारात्मक भी माने गए। धर्म के पूर्ण त्याग की उनकी अवधारणा कई लोगों को अतिवादी लगी। फिर भी, उनका उद्देश्य समाज को समानता, न्याय और तर्क पर आधारित बनाने का था। पेरियार का समाज दर्शन आज भी सामाजिक समरसता, नारी सशक्तिकरण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए प्रेरणा देता है। उन्होंने भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन को एक नई दिशा दी, जिससे आधुनिक भारत में समानता और मानवाधिकारों की चेतना को बल मिला। इस प्रकार, पेरियार का चिंतन भारतीय समाज को आत्मसम्मान, तर्क और सामाजिक न्याय की राह पर अग्रसर करने वाला युगांतकारी दर्शन सिद्ध हुआ।

मुख्य शब्द– आत्मसम्मान आंदोलन, युगांतकारी दर्शन, युक्तिवाद, सामाजिक समरसता, नारी सशक्तिकरण।

परिचय–

पेरियार ई. वी. रामासामी (1879–1973) दक्षिण भारत के प्रमुख समाज सुधारक, तर्कवादी एवं मानवतावादी चिंतक थे, जिन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, लिंग असमानता और अंधविश्वास के विरुद्ध एक सशक्त आंदोलन खड़ा किया। उनका समाज दर्शन मूलतः समानता, तर्कशीलता और आत्मसम्मान के सिद्धांतों पर आधारित था। पेरियार ने "आत्मसम्मान आंदोलन" के माध्यम से सामाजिक न्याय की ऐसी विचारधारा प्रस्तुत की, जिसने तमिल समाज में नवजागरण का कार्य किया।

पेरियार का मानना था कि भारतीय समाज की जड़ें ब्राह्मणवादी वर्चस्व, वर्णव्यवस्था और धार्मिक पाखंड में फंसी हुई हैं, जिन्हें तोड़े बिना समानता स्थापित नहीं की जा सकती। उन्होंने धर्म को सामाजिक शोषण का माध्यम बताया और तर्क एवं विज्ञान पर आधारित जीवन दृष्टि को अपनाने की प्रेरणा दी। उनके अनुसार, मनुष्य को अपने अस्तित्व का सम्मान करते हुए किसी भी प्रकार के सामाजिक या धार्मिक बंधन से मुक्त होना चाहिए। महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता को पेरियार ने समाज परिवर्तन का आधार माना। उन्होंने स्त्रियों को संपत्ति के अधिकार, विवाह में समान भागीदारी और समाज में सम्मानजनक स्थान देने की वकालत की। इसी तरह

उन्होंने अस्पृश्यता, बाल विवाह, दहेज और धार्मिक अनुष्ठानों जैसी कुरीतियों का तीव्र विरोध किया। समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो पेरियार का समाज दर्शन सामाजिक क्रांति की प्रेरणा तो देता है, परंतु उनका अति–तर्कवाद कभी–कभी धार्मिक भावनाओं से टकराता है। फिर भी, उन्होंने समाज में विचारशीलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समानता की भावना को मजबूत करने में अमूल्य योगदान दिया। उनके विचार आज भी सामाजिक न्याय और मानव गरिमा के संघर्ष में मार्गदर्शक सिद्ध हो रहे हैं।[1]

पेरियार का जीवन एवं वैचारिक पृष्ठभूमि

पेरियार ई. वी. रामास्वामी (1879द्1973) दक्षिण भारत के प्रमुख समाज सुधारक, चिंतक और द्रविड़ आंदोलन के अग्रणी नेता थे। उनका जन्म तमिलनाडु के ईरोड ज़िले में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। प्रारंभिक जीवन में वे एक सफल व्यापारी रहे, परंतु समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और धार्मिक रूढ़ियों ने उनके मन में गहरा असंतोष उत्पन्न किया। विशेषकर वाराणसी यात्रा के दौरान ब्राह्मण पुरोहितों द्वारा उनके साथ किए गए अपमानजनक व्यवहार ने उन्हें सामाजिक असमानता के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

पेरियार का समाज दर्शन मूलतः समानता, युक्तिवाद और आत्मसम्मान पर आधारित था। उन्होंने 'आत्मसम्मान आंदोलन' के माध्यम से जाति–विहीन, वर्ग–विहीन और लैंगिक समानता पर आधारित समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा। उनका मानना था कि धर्म और ब्राह्मणवादी परंपराएं समाज को अंधविश्वास और असमानता में बाँधती हैं। इसलिए उन्होंने तर्क और विज्ञान पर आधारित जीवन दृष्टि अपनाने का आग्रह किया।

पेरियार न केवल जाति प्रथा के विरोधी थे, बल्कि उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, विवाह–संबंधी स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकार की भी पुरजोर वकालत की। उनके विचारों में बौद्ध और पश्चिमी तर्कवादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। समीक्षात्मक रूप से देखें तो पेरियार का समाज दर्शन दक्षिण भारत में सामाजिक चेतना का जनांदोलन बन गया। यद्यपि कुछ आलोचकों ने उनके विचारों को अत्यधिक आक्रामक और धर्मविरोधी बताया, फिर भी उन्होंने सामाजिक न्याय, समानता और तर्कशीलता की दिशा में स्थायी परिवर्तन की नींव रखी। उनका योगदान भारत में समानता और मानवाधिकारों के आधुनिक विमर्श का आधार माना जाता है।

इस प्रकार पेरियार का जीवन और विचार भारतीय समाज में विवेक, समानता और सामाजिक सुधार के प्रतीक बनकर अमर हो गए।[2]

पेरियार का समाज दर्शन

पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर दक्षिण भारत के एक महान समाज सुधारक, नास्तिक विचारक और "स्वाभिमान आंदोलन" के प्रणेता थे। उनका समाज दर्शन समानता, न्याय और मानव गरिमा पर आधारित था। उन्होंने जातिवाद, ब्राह्मणवाद, अंधविश्वास और लैंगिक असमानता के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया। पेरियार का समाज दर्शन तर्क, विज्ञान और मानवतावाद की भावना से प्रेरित था। वे मानते थे कि समाज में असमानता का प्रमुख कारण जाति व्यवस्था है, जो व्यक्ति की योग्यता के बजाय जन्म पर आधारित भेदभाव को जन्म देती है। उन्होंने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को सामाजिक शोषण का मूल कारण बताया और "जाति नाश आंदोलन" की शुरुआत की। उनके अनुसार, "मनुष्य पहले मनुष्य है, बाद में कुछ और"– यही उनके दर्शन का मूल था।

महिलाओं के प्रति उनके विचार भी क्रांतिकारी थे। वे स्त्री शिक्षा, विवाह में समान अधिकार, संपत्ति पर स्त्री के अधिकार और पितृसत्तात्मक परंपराओं के उन्मूलन के पक्षधर थे। उन्होंने विवाह संस्था को सुधारने और स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया। समीक्षात्मक रूप से देखा जाए तो, पेरियार का समाज दर्शन अपने समय से कहीं आगे था। उन्होंने धार्मिक और सामाजिक ढांचे को चुनौती देकर तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। हालांकि, उनके नास्तिक और धर्मविरोधी विचारों ने कई लोगों को आहत भी किया और व्यापक सामाजिक स्वीकृति में बाधा उत्पन्न की।[3]

फिर भी, पेरियार का योगदान भारतीय समाज में सामाजिक न्याय, समानता और तर्कशील सोच की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने दलितों, पिछड़ों और महिलाओं को सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए जो संघर्ष किया, वह आधुनिक भारत की सामाजिक चेतना की आधारशिला बना।

मुख्य तत्वः जाति, धर्म, नारी और तर्कवाद पर विचार

पेरियार ई. वी. रामासामी आधुनिक भारत के महान समाज–सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने दक्षिण भारत विशेषतः तमिलनाडु में सामाजिक असमानता, धार्मिक रूढ़िवाद और जाति व्यवस्था के विरुद्ध सशक्त आंदोलन

चलाया। उनका समाज दर्शन तर्क, समानता और मानवाधिकार पर आधारित था। उन्होंने 'स्वाभिमान आंदोलन' (मसि–त्मेचमबज डवअमउमदज) के माध्यम से समाज में व्याप्त अन्यायपूर्ण परंपराओं को चुनौती दी। पेरियार का विचार भारतीय समाज की गहराई में जमी हुई असमानताओं पर प्रहार करता है। उनके दर्शन के चार प्रमुख तत्व– जाति, धर्म, नारी और तर्कवाद भारतीय समाज की जड़ तक पहुँचने का माध्यम बनते हैं।

1. जाति पर विचार–

पेरियार का समाज दर्शन जाति–व्यवस्था के मूल विरोध पर आधारित था। वे मानते थे कि जाति प्रथा केवल सामाजिक भेदभाव नहीं, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक गुलामी का भी आधार है। उन्होंने ब्राह्मणवाद को जातिगत शोषण की जड़ बताया। पेरियार के अनुसार, जाति प्रथा का उद्देश्य समाज को समान अवसरों से वंचित करना और कुछ वर्गों को स्थायी रूप से अधीन बनाकर रखना है।

उनका तर्क था कि जब तक जाति प्रथा समाप्त नहीं होती, तब तक भारत में सच्ची समानता और लोकतंत्र की स्थापना असंभव है। उन्होंने शिक्षा, समान विवाह, और अंतर्जातीय संबंधों को जाति तोड़ने का व्यावहारिक उपाय बताया। पेरियार का यह दृष्टिकोण उस समय के सामाजिक ढांचे को चुनौती देने वाला था, जब जातिगत ऊँच–नीच को धार्मिक रूप से स्वीकार कर लिया गया था।[4]

2. धर्म पर विचार–

पेरियार का धर्म संबंधी दृष्टिकोण कट्टर आलोचनात्मक और तर्कसंगत था। उन्होंने धर्म को समाज में असमानता और अंधविश्वास का मुख्य स्रोत माना। उनके अनुसार, धर्म का उपयोग सत्ता और पुरोहित वर्ग ने जनता को मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखने के लिए किया। उन्होंने विशेष रूप से हिंदू धर्म की आलोचना करते हुए कहा कि यह धर्म 'मनु स्मृति' और 'शास्त्रों' के माध्यम से जाति और लिंग भेद को वैधता देता है। पेरियार ने देवताओं, मूर्तियों और धार्मिक अनुष्ठानों पर प्रश्न उठाए। उनका कहना था कि जब तक लोग अंधविश्वास और ईश्वर की दासता से मुक्त नहीं होंगे, तब तक वे अपने सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं कर पाएंगे। उन्होंने नास्तिकता को सामाजिक मुक्ति का मार्ग माना और लोगों से कहा कि वे "भगवान से नहीं, अपने विवेक से डरें।" धर्म के प्रति उनका यह दृष्टिकोण सामाजिक चेतना जगाने का साधन बना।

3. नारी पर विचार–

पेरियार का नारी–दर्शन उनके समाज–सुधारक व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण आयाम है। वे महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता और आत्मसम्मान के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि "नारी पुरुष की दासी नहीं, बराबर की भागीदार है।" उनके विचार में, स्त्रियों की सामाजिक गुलामी का मूल कारण धर्म और पितृसत्ता है। उन्होंने बाल विवाह, दहेज, पर्दा प्रथा और विधवा–विवाह निषेध जैसी कुरीतियों का विरोध किया। पेरियार के आंदोलन ने महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र विचार की दिशा में प्रेरित किया। उनका मानना था कि समाज तभी प्रगतिशील बन सकता है जब स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और निर्णय प्रक्रिया में समान रूप से भाग लें। पेरियार के अनुसार, "जो समाज स्त्री को गुलाम बनाता है, वह स्वयं गुलाम बन जाता है।"

4. तर्कवाद–

पेरियार के पूरे दर्शन की आत्मा थी। वे हर परंपरा, विचार या विश्वास को तर्क की कसौटी पर परखने के पक्षधर थे। उनके अनुसार, मनुष्य को किसी भी बात को बिना प्रमाण के नहीं मानना चाहिए। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे ईश्वर, धर्म, जाति या समाज के किसी भी नियम को अंधानुकरण से न स्वीकारें। पेरियार के तर्कवादी दृष्टिकोण ने शिक्षा, विज्ञान और विवेकशीलता को सामाजिक सुधार का माध्यम बनाया। उन्होंने कहा कि "विज्ञान और तर्क से ही समाज में अंधविश्वास और शोषण का अंत संभव है।"

इस प्रकार पेरियार का समाज दर्शन सामाजिक समानता, लैंगिक न्याय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की नींव पर टिका है। उनका विचार आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि उन्होंने समाज को धार्मिक और जातिगत बंधनों से मुक्त कर तार्किक, समान और मानवीय समाज की कल्पना की थी।5

पेरियार के समाज दर्शन का प्रभाव और प्रासंगिकता

पेरियार का समाज दर्शन पारंपरिक ब्राह्मणवादी व्यवस्था की आलोचना करता है। उन्होंने धर्म और पौराणिक ग्रंथों की उन व्याख्याओं का विरोध किया जो समाज में जातिगत असमानता को वैध ठहराती थीं। "आत्मसम्मान आंदोलन" के माध्यम से उन्होंने दलितों, पिछड़ों और स्त्रियों में आत्मविश्वास जागृत किया। उनका तर्कवादी दृ

ष्टिकोण भारतीय समाज को वैज्ञानिक और मानवतावादी सोच की ओर अग्रसर करता है।6

पेरियार के विचारों का प्रभाव विशेष रूप से तमिलनाडु में देखा गया, जहाँ सामाजिक न्याय की राजनीति ने उनके दर्शन को अपनाया। डी.एम.के. और ए.आई.ए.डी.एम.के. जैसी पार्टियों ने उनके सिद्धांतों को अपने सामाजिक–राजनीतिक एजेंडे में शामिल किया। महिलाओं की शिक्षा, समान अधिकार और अंतर्जातीय विवाह को बढ़ावा देना उनके प्रभाव की ही देन है। वर्तमान संदर्भ में, पेरियार का समाज दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। आज भी भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव, लिंग असमानता और अंधविश्वास जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। ऐसे में पेरियार के विचार तर्कशीलता, सामाजिक न्याय और मानवीय समानता की दिशा में प्रेरणा देते हैं।[7]

इस प्रकार पेरियार का समाज दर्शन केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समूचे भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए एक दिशा–सूचक सिद्धांत बन सकता है। उनका दृष्टिकोण आधुनिक भारत में समानता, शिक्षा और वैज्ञानिक चेतना के लिए आज भी उतना ही आवश्यक है जितना उनके समय में था।

निष्कर्ष

पेरियार ई. वी. रामास्वामी का समाज दर्शन भारतीय सामाजिक पुनरुत्थान के इतिहास में एक क्रांतिकारी अध्याय के रूप में देखा जाता है। उन्होंने जाति–व्यवस्था, अंधविश्वास, पितृसत्ता और धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध जो वैचारिक संघर्ष किया, वह दक्षिण भारत ही नहीं, पूरे देश के लिए एक सामाजिक जागरण का सूत्रधार बना। उनका विचार था कि समानता और मानव गरिमा के बिना किसी समाज की प्रगति संभव नहीं है। उन्होंने "आत्मसम्मान आंदोलन" के माध्यम से शोषित वर्गों, विशेषकर दलितों और स्त्रियों को आत्मबोध और अधिकार–संघर्ष के लिए प्रेरित किया। पेरियार का समाज दर्शन तर्क, विज्ञान और मानवतावाद पर आधारित था। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि धर्म और परंपराएँ तभी तक उपयोगी हैं, जब तक वे मानवता और समानता की भावना को बढ़ावा दें। उन्होंने ब्राह्मणवाद और वर्ण–व्यवस्था की कठोर आलोचना की, क्योंकि ये सामाजिक असमानता और मानसिक दासता को जन्म देते थे। पेरियार का मत था कि शिक्षा और तर्कशीलता के माध्यम से ही व्यक्ति अंधविश्वासों और सामाजिक बंधनों से मुक्त हो सकता है।

समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो पेरियार का समाज दर्शन कई मायनों में प्रगतिशील और यथार्थवादी था। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन को केवल सैद्धांतिक न रखकर, व्यावहारिक आंदोलन के रूप में जनसामान्य तक पहुँचाया। हालांकि, उनके विचारों में धर्म और परंपरा के प्रति अत्यधिक विरोध के कारण उन्हें कुछ वर्गों से विरोध भी मिला। फिर भी, उन्होंने समाज में तर्कशीलता, समानता और न्याय के लिए जो नींव रखी, वह आज भी प्रासंगिक है।

अंततः कहा जा सकता है कि पेरियार का समाज दर्शन भारतीय समाज को जागृत, वैज्ञानिक और समानतामूलक दिशा में अग्रसर करने का एक सशक्त प्रयास था। उनके विचार आज भी सामाजिक न्याय और मानवाधिकार की नई परिभाषाएँ गढ़ने में प्रेरणा देते हैं।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–सूची–

1. वीरमणि, के., च्मतपलंतः Father of the Tamil Race, पेरियार सेल्फ रिस्पेक्ट प्रोपगेंडा इंस्टिट्यूशन, २००७.
2. अम्मा, ए.आर., Periyar: The Revolutionary Thinker, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान, २०१५.
3. जिगफेल्ड, एडम, Castes and Democracies: Political Representations of Lower Castes in South India, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, २०१४.

4. Thakurta, Paranjoy Guha, Shankar Raghuraman 2004, A Time of Coalitions: Divided We Stand- Sage Publications, New Delhi- p- 230- ISBN- 7619-3237-2.
5. द इकोनॉमिक टाइम्स, 7 मार्च 2018, 28 मार्च 2019, अभिगमन तिथिः 28 मार्च 2019.
6. Har-Anand Publications: New Delhi, p- 425, ISBN: 978-81-241-1164-2.
7. https://storymirror.com/read/hindi/story/periyaar&kaa drshn/k0n8wyn4

Cite this Article-

'डॉ० अजीत कुमार', "पेरियार के समाज दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन", *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:11, November 2024.*

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i40013
Published Date- 12 November 2024